डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
एम्.ए., बी.एड्., पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर।

शिवाजी विश्वविद्यालय हिंदी विभाग कोल्हापुर

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि **सुश्री. सुवर्णा सिद्धू गावडे** द्वारा प्रस्तुत **''श्रवणकुमार गोस्वामीकृत : 'हस्तक्षेप' उपन्यास में चित्रित आदिवासी जीवन''** लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

19.03.08

(*डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण*)

Head
Dept. of Hindi,
Shivaji University
Kolhapur-416004

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 19 MAR 2008

डॉ. सुनील बापु बनसोडे
एम्.ए.,एम्.फिल.,पीएच्.डी.,सेट
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
जयसिंगपुर महाविद्यालय,
जयसिंगपुर - 416 101।

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि **सुश्री. सुवर्णा सिद्धू गावडे** ने मेरे निर्देशन में **''श्रवणकुमार गोस्वामीकृत: 'हस्तक्षेप' उपन्यास में चित्रित आदिवासी जीवन''** लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत किया है। पूर्व नियोजित संपन्न इस कार्य में शोध-छात्रा ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोध-छात्रा के कार्य से मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ। इस लघु शोध-प्रबंध को आद्योपांत पढ़कर मैं इसे इसे परीक्षणार्थ अग्रेषित करने हेतु अनुमति प्रदान करता हूँ। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय में एम. फिल्. उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है

शोध-निर्देशक

(डॉ. सुनील बापु बनसोडे)

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 19 MAR 2008

प्रख्यापन

मैं प्रख्यापित करती हूँ कि **''श्रवणकुमार गोस्वामीकृत : 'हस्तक्षेप' उपन्यास में चित्रित आदिवासी जीवन''** लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय में एम्. फिल. उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध-छात्रा

Gavade.

(सुश्री. सुवर्णा सिद्धू गावडे)

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 19 MAR 2008

उपन्यासकार

श्रवणकुमार गोस्वामी

प्राक्कथन

प्राक्कथन

प्रेरणा एवं विषय चयन -

मेरी रुचि पहले से हिंदी कथा साहित्य में थी। एम्. ए. करने के बाद मेरे मन में अनुसंधान के प्रति मेरी जिज्ञासा जागी। एम्. ए. के अध्ययन के समय उपन्यास विधा के अंतर्गत मैने हजारीप्रसाद द्विवेदी कृत 'बाणभट की आत्मकथा', जैनेंद्रकुमार जी का 'त्यागपत्र' और श्रवणकुमार गोस्वामी जी का 'केंद्र और परिधि' आदि उपन्यासों का अध्ययन किया था। जब मैने एम्. फिल. में प्रवेश लिया तब हमारे गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी ने सभी विधाओं की किताबें पढ़ने के लिए कहा। उपन्यास विधा में पहले से ही बहुत रुचि होने के कारण मैं विभिन्न उपन्यासकारों के उपन्यास को पढ़ती रही। जिसमें वीरेंद्र जैन का 'डूब', राकेश सिंह का 'पठार पर कोहरा', देवेंद्र सत्यार्थ का 'रथ का पहिये', मैत्रेयी पुष्पा का 'चाक', चित्रा मुदगल का 'आवां', कमलेश्वर का 'अनबीता व्यतीत', अलका सरावगी का 'कलिकथा वाया : बाइपास', विनोदकुमार शुक्लजी का 'नौकर की कमीज', गुलशेर खान शानी जी का 'काला जल' अज्ञेय जी का 'अपने अपने अजनबी', 'नदी के द्वीप', 'शेखर : एक जीवनी', जगदीशचंद्र माथुर का 'धरती धन न अपना', शिवशरण सिंह का 'शैलूष', विद्यासागर नौटियालजी का 'उत्तर बायां है', राजेंद्र यादव जी का 'शह और मात', प्रेमचंद का 'गबन', 'सेवासदन', रंगभूमि 'निर्मला', 'प्रेमाश्रम' आदि उपन्यास भी पढ़े। लेकिन जब मैने श्रवणकुमार गोस्वामी जी का 'हस्तक्षेप' उपन्यास पढ़ा तब मुझे लगा कि इस उपन्यास पर अनुसंधान का काम किया जा सकता है, क्योंकि यह उपन्यास विषय की दृष्टि से नया आयाम दे सकता है। सौभाग्यवश गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी ने मुझे डॉ. सुनील बनसोडे जी से विचार-विमर्श करने के लिए कहा। तब मैने उनसे विचार-विमर्श करने के बाद मेरे लघु शोध-प्रबंध के विषय का चयन किया। मेरे लघु शोध-प्रबंध का शीर्षक है- ''श्रवणकुमार गोस्वामीकृत : 'हस्तक्षेप' उपन्यास में चित्रित आदिवासी जीवन''।

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न खड़े हुए थे -

1. श्रवणकुमार गोस्वामी जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व कैसा होगा ?

2. गोस्वामी के जीवन का साहित्य पर किस तरह प्रभाव पड़ा है ?
3. गोस्वामी जी ने आदिवासी जीवन को 'हस्तक्षेप' में किस तरह चित्रित किया है? और क्यों?
4. गोस्वामी जी ने आदिवासियों के किन-किन समस्याओं को उठाया है ?
5. 'हस्तक्षेप' उपन्यास लिखने का लेखक का मूल प्रतिपाद्य क्या है ?
6. आदिवासियों को 'संस्कृति', 'कल्याण', 'आयोग', 'परिषद' आदि के नाम पर बुद्धिजीवी, राजनेता, गैर-आदिवासी एवं आदिवासी नेता लोगों ने धन कमाने का स्रोत क्यों बनाया है ?
7. भूमंडलीकरण के जमाने में आदिवासियों का विकास हो रहा है ? स्वातंत्र्योत्तर भारत की एक बड़ी त्रासदी बन गया है ? क्यों ? आदि अनेक सवाल मेरे सामने खड़े थे।

'हस्तक्षेप' उपन्यास के अध्ययन के पश्चात् मुझे उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हुए उन्हें उपसंहार में दिया है। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित करके प्रस्तुत शोध के विषय का विवेचन-विश्लेषण किया है।

लघु शोध-प्रबंध की सीमा और व्याप्ति -

हर शोध विषय की अपनी सीमा और व्याप्ति होती है। इसके सामंजस्य से ही शोध-कार्य सरलता से संपन्न हो पाता है। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर प्रस्तुत विषय का विवेचन किया है -

प्रथम अध्याय - ''श्रवणकुमार गोस्वामी का संक्षिप्त परिचय''

इस अध्याय के अंतर्गत श्रवणकुमार गोस्वामी जी का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया है। उनके व्यक्तित्व के अंतर्गत जन्म, शिक्षा, परिवार, नौकरी, विवाह, अध्यापन कार्य, जेल संस्मरण आदि अनेक बातों का संक्षिप्त में परिचय दिया है। उनके कृतित्व के अंतर्गत उपन्यास, कहानी, नाटक, व्यंग्य, आलोचना, प्रहसन, शब्दचित्र, संपादन आदि अनेक बातों का जिक्र संक्षिप्त में किया है। अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं।

द्वितीय अध्याय - ''आदिवासी जीवन और विवेच्य उपन्यास का आदिवासी जीवन''

इस अध्याय के अंतर्गत आदिवासी शब्द का अर्थ, 'आदिवासी की परिभाषा' आदिवासी जीवन का स्वरूप, रहन-सहन, वेशभूषा, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक, आदिवासी नृत्य, गीत, शस्त्र, आदिवासी प्रथाएँ आदि बातों का अध्ययन साथ-ही-साथ विवेच्य उपन्यास में चित्रित आदिवासी जीवन का चित्रण किया है। उसमें जीवन, रहन-सहन, वेशभूषा, शस्त्र, नृत्य, भाषा, रीति-रिवाज आदि बातों का अध्ययन प्रस्तुत कर अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

तृतीय अध्याय - ''तत्त्वों के आधार पर 'हस्तक्षेप' उपन्यास की समीक्षा -

इस अध्याय के अंतर्गत उपन्यास के तत्त्वों के आधार पर हस्तक्षेप उपन्यास की समीक्षा की है। उपन्यास के तत्त्व कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, कथोपकथन एवं संवाद, देशकाल तथा वातावरण, भाषा शैली उद्देश्य एवं शीर्षक की सार्थकता के आधार पर उपन्यास की समीक्षा करके अध्याय के अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं।

चतुर्थ अध्याय -'' 'हस्तक्षेप' उपन्यास में चित्रित आदिवासी जीवन की समस्या''

इस अध्याय के अंतर्गत 'हस्तक्षेप' उपन्यास में चित्रित आदिवासी जीवन की समस्याओं का अध्ययन किया है। इसके अंतर्गत गोस्वामी जी आदिवासी जीवन की समस्याओं को प्रस्तुत किया है- लड़कियों की सुरक्षा की समस्या, संस्कृति के नाम पर झूठा-प्रदर्शन, लड़कियों का दैहिक शोषण, लालच दिखाकर आदिवासी लोगों को फँसाना, विस्थापन की समस्या, बाहरी लोगों द्वारा आदिवासी लोगों का शोषण, व्यसनाधीनता, निर्धनता की समस्या, शिक्षा की दुरवस्था, अंधश्रद्धा से पीड़ित, बलात्कार से पीड़ित, सेवा के नाम पर शारीरिक शोषण आदि अनेक समस्याओं को गोस्वामी जी ने उठाया है। अध्ययन के पश्चात् अध्याय के अंत में निष्कर्ष दर्ज किए हैं।

अंत में 'उपसंहार' के रूप में इस लघु शोध-प्रबंध का निचोड़ सार रूप में दिया है। इसमें पूर्ण विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष को दिया गया है। इसके उपरांत परिशिष्ट एवं संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध की मौलिकता -

1. ''श्रवणकुमार गोस्वामीकृत : 'हस्तक्षेप' उपन्यास में चित्रित आदिवासी जीवन'' को केंद्रबिंदु बनाकर इस लघु शोध-प्रबंध में स्वतंत्र रूप से प्रथमतः ही अनुसंधान संपन्न हुआ है।
2. प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में आदिवासी जीवन का सूक्ष्मता से अध्ययन कर विवेच्य उपन्यास में चित्रित आदिवासी जीवन की समस्याओं का बारीकी से अध्ययन किया है।
3. आदिवासियों के विकास के लिए जो लोग काम करना चाहते हैं, उन्हें कठघरे में खड़ा कर दिया जाता है और जो लोग विकास के नाम पर अपनी दुकान चलाते हैं। उन लोगों की दुकान फल-फूल रही है। इसका चित्रण श्रवणकुमार गोस्वामी जी ने यहाँ प्रस्तुत किया है।
4. श्रवणकुमार गोस्वामी जी ने 'हस्तक्षेप' उपन्यास में हर प्रकार की प्रतिकूलताओं को झेलते हुए प्राकृतिक परिवेश से तादात्म्य स्थापित करके निश्छल एवं स्वच्छंदी जीवन जीनेवाले 'आदिवासी' विशेषण से संबोधित किए जानेवाले लोगों के जीवन को आधार बनाया है।
5. आज स्वतंत्र भारत के सामाजिक जीवन की एक बड़ी त्रासदी है- आदिवासी जीवन की समस्या बन गई है।

कृतज्ञता ज्ञापन

किसी भी कार्य की पूर्ति असंख्य करों के सहायता से होती है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के दौरान प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, विद्वजन परिवार के सदस्य एवं सहपाठियों के बिना सफल नहीं हो सकता। इसलिए उनका सहयोग प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना मैं अपना आद्य कर्तव्य समझती हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का प्रणयन श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. सुनील बनसोडे जी के सुयोग्य निर्देशन में ही हुआ है। लघु शोध-प्रबंध से ही उन्होने मेरे प्रति जिस असीम स्नेह और गहन वात्सल्यपूर्ण आत्मीयता का परिचय दिया उसी का यह प्रतिफल है। इसे मैं अपना परम सौभाग्य मानती हूँ। वास्तव में लघु शोध-प्रबंध गुरुवर्य के सौम्य व्यक्तित्व, मौलिक विचारों, प्रोत्साहन, सहयोग एवं आशीर्वाद का प्रतिफल यह मेरा लघु शोध-प्रबंध है।

लघु शोध-प्रबंध के दौरान स्रोत सामग्री उपलब्ध कराने एवं कठिनाइयों को सुलझाने में उपन्यासकार डॉ. श्रवणकुमार गोस्वामी जी ने मौलिक सहायता की। उन्होने समय-समय पर पत्राचार एवं दूरभाष के माध्यम से मेरी शंकाओं का समाधान करते हुए मुझे सदैव प्रेरित एवं शुभ आशीर्वाद से ही यह कार्य उचित पथ आरूढ़ किया। उन्होने मुझे जो ममत्व, स्नेह, आशीर्वाद तथा सहयोग प्रदान किया वह शब्दों से परे है। अतः मैं आपकी हृदय से आभारी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन चव्हाण जी ने मौलिक मार्गदर्शन एवं सहयोग प्रदान किया। साथ-ही-साथ श्रद्धेय गुरुवर्य डॉ. पद्मा पाटील जी का भी मौलिक मार्गदर्शन मिला। डॉ. सुलोचना आंतरेड्डी, डॉ. शोभा निंबाळकर, प्रौढ़ निरंतर शिक्षण के श्री. गोरखनाथ कांबळे जी तथा मेरे महाविद्यालय के गुरुजनों में डॉ. मोहन सावंत, प्रा. अमर कांबळे, डॉ. सौदागार साळुंखे, प्रा. शेळके सर, डॉ. भारती शेळके जी एवं मंगेश कोळेकर जी (लिपिक) आदि इन सभी लोगों ने मुझे लघु शोध-प्रबंध के लिए प्रोत्साहित एवं प्रेरित किया। इसके लिए उनके प्रति हृदय से आभार प्रकट करती हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के 'मागेल त्याला काम' इस योजना के समन्वयक डॉ. डी. के. गायकवाड जी तथा पी. जी. सेमीनार के डॉ. सोनजे जी, सौ. महाडेश्वर जी, श्री. कोल्हे

जी, श्री. सातपुते जी, श्री. रजपूत जी, श्री. भेंडेकर जी, श्री. सांवगावे जी, श्री. कदम जी, श्री. काशीद तथा श्री. पाठक जी आदि ने स्नेहपूर्ण सहयोग प्रदान किया। इसके लिए मैं इन स्वजनों के प्रति स्नेहभाव प्रकट करती हूँ।

मेरे परमपूज्य आदरणीय एवं श्रद्धेय माताजी (आई), पिताजी (बाबा) की शुभ कामनाओं एवं आशीर्वाद का ही यह प्रसाद है। स्वयं अपार कष्ट सहकर अनपढ़ माताजी और चौथी उत्तीर्ण पिताजी ने अपनी स्वप्न पूर्ति मेरी पढ़ाई पूरी करने के लिए हमेशा मेरी उन्नति हेतु ईश्वर के पास कामना की। मेरी बहन सौ. रूपाली खोत, सौ. संगीता कारंडे तथा जीजाजी श्री. बाबासो खोत और श्री. बाबासो कारंडे साथ-ही-साथ भाई अर्जुन और कुमार ने भी खुद कष्ट सहकर मेरी पढ़ाई जारी रखने के लिए सदैव तत्पर एवं स्नेहपूर्ण सहयोग प्रदान किया। साथ-ही-साथ मेरे स्वर्गीय काकाजी श्री. आप्पासाहेब मंगसुळे तथा मौसी, बहन धनश्री, भाई शिवाजी और तेजेश ने भी समय-समय पर मुझे सहयोग प्रदान किया है। मेरे सभी चाचाजी तथा चाचीजी, भाई श्री. विजय गावडे तथा श्री. प्रकाश गावडे जी का भी मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ।

मेरे परम पूज्य दादाजी स्वर्गीय श्री. बाबु गावडे तथा दादी स्वर्गीय भागुबाई गावडे एवं मेरे नानिहाल के नानाजी श्री. सत्याप्पा ठोंबरे तथा नानी सौ. सखुबाई ठोंबरे (उमळवाड), मेरे मामाजी श्री. काशीनाथ ठोंबरे, श्री. प्रकाश ठोंबरे जी, श्री. बाळासाहेब ठोंबरे जी, प्रा. रावसाहेब ठोंबरे (कणकणवली) तथा श्री. भाऊसाहेब ठोंबरे जी एवं मेरी मामी जी सौ. अनुसया जी, सौ. रंजना जी, सौ. संगिता जी एवं सौ. मनीषा जी आदि के द्वारा मिले अपार स्नेह एवं सहयोग तथा परामर्श से ही इस लघु शोध-प्रबंध को पूरा करने में सहयोग रहा। अतः इन सभी के प्रति भी मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में सहपाठियों में सुश्री सुनीता कांबळे, प्रगती पाटील, वैशाली जाधव, सौ. स्मिता नायक, दीपा केळुसकर, रूपाली जंगम, वैशाली कुंभार, सीमांजली धनवडे, गीता दोडमणी, सौ. वर्षा बरगाले, सौ. काजल यादव, नंदा चंदूरे, प्रभात शिंदे, श्रावणी कांबळे एवं वंदना क्षीरसागर, श्री. अतुल माळी, अजित फाळके, अजित लिपारे, अनिल मकर, संतोष कोळेकर, महादेव कांबळे, सर्जेराव पाटील, प्रज्ञावंत शिंदे, सुनील बुद्धनवर, सचिन

देशमुख, विद्यानंद कांबळे, प्रा. प्रदीप कांबळे, सर्जेराव कांबळे आदि के द्वारा मिले सहयोग एवं परामर्श से भी मैं लाभान्वित हुई हूँ। अतः इन सभी के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

इनके अतिरिक्त बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापूर के डॉ. वायदंडे जी, श्रीमती सुमित्रा जाधव (अवकाश प्राप्त), श्रीमती नलिनी पाटील जी, श्रीमती संध्या पाटील, श्री. माटेकर जी तथा वहाँ के सभी कर्मचारियों के प्रति भी हृदय से उनकी ऋणी हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध का सुंदर रूप से टंकण करने के लिए मैं श्री. अल्ताफ मोमीन जी (कोल्हापूर) के प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

अंत में उपर्युक्त के अतिरिक्त उन सभी लेखकों, मित्रों, शुभचिंतकों और सहपाठियों ने इस कार्य में मेरी सहायता की जिनके नाम ऊपर नहीं आ सके, उनके प्रति मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ। लघु शोध-प्रबंध को अत्यंत विनम्रता के साथ विद्वानों के सामने मेरी यह मौलिक रचना परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

शोध-छात्रा

Gavade.

(सुश्री. सुवर्णा सिद्धू गावडे)

स्थान :- कोल्हापुर।

तिथि :- 19 MAR 2008

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय - ''श्रवणकुमार गोस्वामी का संक्षिप्त परिचय'' पृ. 1 - 15

पृष्ठभूमि

1.1 श्रवणकुमार गोस्वामी का व्यक्तित्व

1.1.1 जन्म

1.1.2 बचपन

1.1.3 परिवार

1.1.4 शिक्षा-दीक्षा

1.1.5 नौकरी

1.1.6 जेल जीवन

1.1.7 बहुआयामी व्यक्तित्व

1.1.8 पुरस्कार

1.2 श्रवणकुमार गोस्वामी का कृतित्व का परिचय

1.2.1 उपन्यास

1.2.1.1 जंगलतंत्रम्

1.2.1.2 सेतु

1.2.1.3 भारत बनाम इंडिया

1.2.1.4 दर्पण झूठ ना बोले

1.2.1.5 राहुकेतु

1.2.1.6 मेरे मरने के बाद

1.2.1.7 चक्रव्यूह

1.2.1.8 एक टुकड़ा सच

1.2.1.9 आदमखोर

1.2.1.10 केंद्र और परिधि

1.2.1.11 कजरी

1.2.1.12 हस्तक्षेप

1.2.2 नाटक साहित्य

1.2.2.1 कल दिल्ली की बारी है

1.2.2.2 समय

1.2.2.3 सोमा

1.2.3 प्रहसन

1.2.3.1 पति-सुधार केंद्र

1.2.3.2 हमारी माँगे पूरी करो

1.2.4 शोध और आलोचना

1.2.4.1 नागपुरी और उसके बृहद्-त्रय (शोध)

1.2.4.2 नागपुरी शिष्ट साहित्य (शोध)

1.2.4.3 नागपुरी भाषा (शोध)

1.2.4.4 नागपुरी का व्याकरण

1.2.5 आलोचना

1.2.5.1 राधाकृष्ण

1.2.6 कहानी संग्रह

1.2.6.1 जिस दीये में तेल नहीं

1.2.7 संस्मरण

1.2.7.1 लौहकपाट के पीछे (जेल संस्मरण)

1.2.8 प्रमुख संपादित ग्रंथ

1.2.8.1 डॉ. बुल्के स्मृति-ग्रंथ

1.2.8.2 मुंडारी टीका

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय - ''आदिवासी जीवन और विवेच्य उपन्यास का आदिवासी जीवन पृ. 16- 43

पृष्ठभूमि

2.1 सामान्य परिचय

2.1.1 उत्तरपूर्वीय क्षेत्र

2.1.2 मध्य प्रदेश

2.1.3 पश्चिमी क्षेत्र

2.1.4 दक्षिणी क्षेत्र

2.2 'आदिवासी' शब्द का अर्थ

2.3 'आदिवासी' की परिभाषा

2.3.1 बोअस

2.3.2 गिलिन और गिलिन

2.3.3 डॉ. डी. एन्. मजूमदार

2.3.4 डब्लू. एच्. आर. रिव्हर्स

2.3.5 इम्पीरियल गजेटियर

2.3.6 हरिकृष्ण रावत

2.3.7 समाजशास्त्र विश्वकोश

2.4 आदिवासी : जीवन का स्वरूप

2.4.1 आर्थिक जीवन

2.4.2 सामाजिक जीवन

2.4.3 धार्मिक जीवन

2.4.3.1 निवासस्थान

2.4.3.2 खान-पान

2.4.3.3 वेशभूषा

2.4.3.4 संस्कार की विधियाँ

2.4.3.5 युवागृह

2.4.3.6 साप्ताहिक बाजार

2.4.3.7 जंगल का महत्त्व

2.4.3.8 उत्सवपर्व एवं त्यौहार

2.4.3.9 दारू का महत्त्व

2.4.3.10 परिवार

2.4.3.11 वाद्य

2.4.3.12 नृत्य

2.5 विवेच्य उपन्यास का आदिवासी जीवन

2.5.1 प्रकृति चित्रण

2.5.2 आश्रयस्थलं एवं निवासस्थान

2.5.3 वेशभूषा

2.5.4 खान-पान

2.5.5 परंपरा और रीतिरिवाज

2.5.6 नृत्य

2.5.7 कृषि

2.5.8 शिक्षा व्यवस्था

2.5.9 यातायात

2.5.10 शस्त्र

2.5.11 औद्योगिकीकरण का प्रभाव

2.5.12 भाषा

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय :- ''तत्त्वों के आधार पर 'हस्तक्षेप' उपन्यास की समीक्षा'' पृ. 44 - 88

3.1 कथावस्तु

3.1.1 उपन्यास की कथावस्तु

3.2 पात्र एवं चरित्र-चित्रण

3.2.1 प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

3.2.1.1 डॉ. महुआ चक्रवर्ती

3.2.1.1.1 सौंदर्यवती

3.2.1.1.2 संघर्षशील

3.2.1.1.3 साहसी एवं निर्भीड

3.2.1.1.4 आत्मीयतापूर्ण

3.2.1.1.5 स्वाभिमानी

3.2.1.1.6 मानवतावादी

3.2.1.1.7 संवेदनशील एवं स्वावलंबी नारी

3.2.1.1.8 अंतर्द्वंद्व से पीड़ित नारी

3.2.1.2 करमा भगत

3.2.1.2.1 सीधा-साधा एवं निश्छल प्रवृत्तिवाला

3.2.1.2.2 प्रतिभासंपन्न एवं बुद्धिमानी

3.2.1.2.3 सेवाभावी वृत्तिवाली

3.2.1.2.4 संवेदनशील व्यक्तित्ववाला

3.2.1.2.5 आदिवासियों के प्रति समर्पित

3.2.1.2.6 संघर्षशील व्यक्तित्व

3.2.1.2.7 मानवतावादी दृष्टिकोण

3.2.1.3 बिरसी भगत

3.2.1.3.1 सेवाभावी व्यक्तित्व

3.2.1.3.2 प्रेरणामयी स्रोत

3.2.1.3.3 सीधा-साधा जीवन निर्वाह करनेवाली

3.2.1.3.4 संवेदनशील

3.2.1.3.5 संघर्षशील

3.2.1.3.6 आदर्शों के प्रति समर्पित

3.2.2 गौण पात्र

3.2.2.1 नेताजी

3.2.2.2 विधायकजी

3.2.2.3 रहमत अली

3.2.2.4 लंबू और मोटू

3.2.2.5 फुलिया

3.2.2.6 डॉ. सक्सेना

3.2.2.7 लुसी और कार्नेलिया

3.2.2.8 डॉ. चौबे

3.2.2.9 डॉ. सीमा ठाकुर

3.2.2.10 हेलेना

3.3 कथोपकथन

3.3.1 भावात्मक संवाद

3.3.2 आवेशात्मक संवाद

3.3.3 नाटकीय संवाद

3.3.4 हास्य-व्यंग्यपूर्ण संवाद

3.3.5 गंभीर संवाद

3.3.6 व्याख्यात्मक संवाद

3.3.7 मनोवैज्ञानिक संवाद

3.3.8 मार्मिक संवाद

3.4 देश, काल तथा वातावरण

3.4.1 आंतरिक वातावरण

3.4.2 घटनाओं एवं परिस्थिति का चित्रण

3.4.3 पात्रों की मानसिकता का चित्रण

3.4.4 प्रकृति चित्रण

3.4.5 राजनीतिक वातावरण

3.4.6 सांस्कृतिक वातावरण

3.4.7 सामाजिक वातावरण

3.5 भाषाशैली

3.5.1 शब्द के विभिन्न रूप

3.5.2 तत्सम शब्द

3.5.3 तद्भव शब्द

3.5.4 संस्कृत शब्द

3.5.5 उर्दू शब्द

3.5.6 अंग्रेजी शब्द

3.5.7 आदिवासी शब्द

3.5.8 द्विरूक्त शब्द

3.5.9 अपशब्दों का प्रयोग

3.5.10 मुहावरों का प्रयोग

3.5.11 कहावतों का प्रयोग

3.5.12 फिल्मी गीत एवं आदिवासी गीत का प्रयोग

3.6 शैली

3.6.1 वर्णनात्मक शैली

3.6.2 विश्लेषणात्मक शैली

3.6.3 चेतनाप्रवाह शैली

3.6.4 संवाद शैली

3.6.5 पत्रात्मक शैली

3.6.6 मनोविश्लेषणात्मक शैली

3.6.7 पूर्वदीप्ति शैली

3.6.8 नाटकीय शैली

3.7 उद्देश्य

3.8 शीर्षक की सार्थकता

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय - '' 'हस्तक्षेप' में चित्रित आदिवासी जीवन की समस्या'' **पृ. 89 - 103**

पृष्ठभूमि

4.1 लड़कियों की सुरक्षा की समस्या

4.2 'संस्कृति' के विकास के नाम पर झूठा-प्रदर्शन

4.3 लड़कियों का दैहिक शोषण

4.4 लालच दिखाकर फँसाने की समस्या

4.5 विस्थापन की समस्या (मकान की समस्या)

4.6 यातायात की असुविधा

4.7 बाहरी लोगों द्वारा आदिवासियों का शोषण

4.8 व्यसनाधीनता की समस्या

4.9 रूढ़ि परंपरा और अंधश्रद्धा से ग्रस्त आदिवासी लोग

4.10 अज्ञान या पिछड़ेपन की समस्या

4.11 बलात्कार से पीड़ित आदिवासी युवतियाँ

4.12 शिक्षा के क्षेत्र में भ्रष्टाचार की समस्या

4.13 निर्धनता की समस्या

निष्कर्ष

उपसंहार **पृ. 104 - 109**

संदर्भ ग्रंथ सूची **पृ. 110 - 114**

परिशिष्ट **पृ. 115 - 120**